भजन “भये प्रगट कृपाला दीनदयाला”

भये प्रगट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी |
हर्षित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप विचारी |
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी |
भूषण वनमाला नयन बिसाला शोभासिंधू खरारी |
कह दुई कर जोरी अस्तुति तोरी कही बिधि करौं अनंता |
माया गुण ज्ञाना तीत अमाना वेद पुरान भनंता |
करुना सुखसागर सुब गुण आगर जेहि गावाहिं श्रुति संता |
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयौ प्रगट श्रीकंता |
ब्रमांड निकाया निर्मित माया रोम-रोम प्रति वेद कहे |
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहे |
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुस्काना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहे |
कही कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सूत प्रेम लहे |
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा |
कीजै शिशु लीला अति प्रियशीला यह सुख परम अनूपा |
सुनी वचन सुजाना रोदन ठाना होई बालक सुरभूपा |
यह चरित जे गावही हरिपद पावही ते ना परहिं भवकूपा |
भये प्रगट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी |
हर्षित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप विचारी |

www.hanumanchalisalyric.com